भारत की कम्युनिष्ट पार्टी (माओवादी)

दक्षिण रीजनल कमेटी

भारत की 'सेना में भर्ती' रैली को बहिष्कार करें।

मई 28 से जून 2 तक चलाई जा रही थल सेना भर्ती रैली का अयोजन को एक मत से खंडन करें।

प्रेस विज्ञप्ति

प्रिय युवा युवतिया!

भारत की थल सेना में भर्ती के लिए अपने बस्तर संभाग के सभी जिलों में मई 28 से 2 जून तक थल सेना भर्ती रैलियों का अयोजन करने जा रही है। इस सैनिक भर्ती रैलियों को खडा से खडा विरोध करते हुए हम सेना में भर्ती रैली का बहिष्कार करने हम आप सब से अहवन करते है।

भारत की सेना में हम क्यों भर्ती नही होना है?

1. भारत की सेना शोषक वर्गो की सुरक्षा एवं कानूनी व्यवस्था को बनाएं रखने के लिए समर्पित है। भारतीय सेना ब्रिटिश जमाने के उपनिवेशिक मैन्युवेल्स के आधार पर निर्मितकर उनकी हितों के लिए पूरी तरह काम कर रही है। इसलिए हम भारत की सेना में भर्ती का कड़ा विरोध करनी है।

2. विगत 60 वर्षो में भारत की सेना की बंदूकें किन के उपर निशाना सादी है। किनको कत्ल की है? लूटेरे शासक वर्गो की हितों का आडे आने वाले जनता को दमन करते हुए उन्हें कत्ल करने वाली भारत की सेना में कोई भी भर्ती नही होना चाहिए ।

3. सच्चे देश भक्तियों को, संघर्षशील कश्मिर, नागालैंड़ मणिपूर, त्रिपूरा आदि राष्ट्रीयताओं की संघर्षो पर निर्मम तरीके से दमन को जारी रखा है। उन्हें घरों से उठाकर लापता करना एवं हत्या करने वाली शोषणवादी शासक वर्गो की सुरक्षा ही इनकी दायित्व है। ऐसे झूठे देश भक्ति से आम जनता को खत्म करने वाली भारत की सेना में भर्ती होना देश द्रोही एवं जनता के साथ गद्दारी होगी।

4. देश के सारी उत्पीडित जनता को भूमि, भूक्ति एवं शोषण से मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहे क्रांतिकारियों को कत्ल करते हुए जघन्य हत्यारें की तरह व्यवहार कर रहे भारत की सेना में भर्ती होना अपने वर्ग के लिए हमें खुद ही गद्दारी किया जैसे होगा।

5. देश के विशाल वन अंचलों में मौजूद अपार वनसंपदों की असली मालिक रहे आदिवासी जनता की आस्तित्व को ही सैनिक बंदूकों से मिटाते हुए जनता की संपदाओं को टाटा,एस्सार, वेदांता, जैसे बड़े कारपोरेट वर्गो को सौंप ने के लिए लूटेरे शासक वर्गो द्वारा जनता पर करने जा रही अन्याय पूर्ण युद्ध के लिए तैयारी कर रही भारत की सेना में भर्ती होना कभी भी क्षमा न करने वाला अपराध है।

6. पुलिस, अर्ध सैनिक बलों एवं सेना में भर्ती के लिए आज आदिवासी ही चाहिए,। शासन द्वारा प्रायोजित सलवा जुडूम के लिए आदिवासी एस.पी.ओ. चाहिए उनके द्वारा चलाई जा रही ऑपरेशन ग्रीन हंट के लिए भी आदिवासी ही चाहिए। यने अपने ऑखों को अपनि उंगली से फोड़ने जैसा शासक वर्गो की नीतियों को समझते हुए सेना में भर्ती होने को विरोध करनी है।

7. सेना में उच्च अधिकारियों द्वारा की जा रही अपमान, किए जा रही धमकी,किए जा रही मारपीट को झेलते कई सैनिकों ने आत्माहत्या की है। आपस में हत्याएँ सेना में आम बात बन गई। बेदभाव, गैर लोकतंत्रिक व्यवहार, नौकरशाही की भारि दबाव में सढ़ रही लूटेरे सरकार की सेना में भर्ती होना अपने आत्मा को धौका देने जैसे ही होगा। पीडित वर्गों के बच्चों शासक वर्गो के लिए सैनिक न बने।

8. पडोंसी देश की न्याइक संघर्षो को दबाने के लिए भारत की सेना को देश के शासक वर्गो ने अपने विस्तारवादी सांजीशों के लिए इस्तेमाल होने के चलते, दक्षिण एशिया की जनता के नजरों में काफी बदनाम हो चुी भारत के सेना में भर्ती होना एक बड़ा अपराध जैसे ही होगा।

9. भारत के सेना याने, कत्ल, अत्याचार, लूट, लापता करना बम विस्फोटों का पर्याय बनी है। धार्मिक अल्पसंख्याकों के प्रति ध्वेषपूर्ण रवैया से भरी, जनता की नजरों में बदनाम हो चुकी सेना में भर्ती होना याने निर्ल्लजपूर्ण व्यवहार होगी। आम जनता से संबंध छूट के दुर हो रही सेना में भारी कटौतियों की भरपाई करने के लिए भारत की सेना में भर्ती होना कितना उचित है। सोचिएगा।

10 देश में पीडित जनता दस साल पहले जन मुक्ति छापामार सेना कि (पी.एल.जी.ए) गठन कर आंदोलन कर रहे है। इस जन मुक्ति छापामार सेना में भर्ती होकर सच्चे देश भक्त, जन सेवक, के रूप में मान सम्मान से शान से जनवादी तरीके से जीना सबसे सर्वापरि एवं उत्तम तरीका है। आम जनता को दमन करने वाले भारत के सेना में भर्ती न होवे – जन मुक्ति छापामार सेना में भर्ती होवे।

क्रांतिकारी अभिवदान के साथ

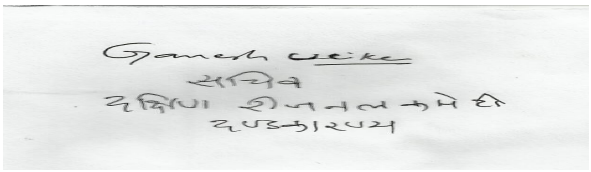

गणेश उईके

सचिव

दक्षिण रीजनल कमेट

दिनांक 19,5,2012

भाकपा (माओवादी)